कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव) : (क) 1988–89 के दौरान, उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि होने के फल-स्वरूप, तिलहनों के मूल्य 1987–88 में असाधारण रूप से ऊंचे रहे मूल्यों से कम हो गए हैं।

(ख) और (ग) सरकार ने, यह सुनिश्चित करने के लिए कि सरसों सहित तिलहनों के उत्पादकों को उनके उत्पाद के उचित दाम मिल सकें, दो सार्वजनिक एजेंसियां नियुक्त की हैं। भारत का राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लि० (नेफेड) को तिलहन उत्पादकों को न्यनतम समर्थन मूल्यों पर बाजार समर्थन प्रदान करने की जिम्मेवारी सौंपी गई हैं। सरकार ने बाजार हस्तक्षेप एजेंसी के रूप में राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड को भी शामिल किया है ताकि खाद्य तेलों/तिलहनों के मूल्यों को उन स्तरों पर बनाए रखा जा सके जो किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए उचित हों।

(घ) और (ङ) राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड तिलहन उत्पादक सहकारी संघों के जरिए किसानों से तिलहनों की अधिप्राप्ति करता है।

फलों और सब्जियों की प्रति व्यक्ति उपलब्धता

1340. **श्री राम जेठमलानी** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में आम आदमी द्वारा प्रति व्यक्ति प्रतिदिन औसत उपभोग की तुलना में फलों व सब्जियों का वर्तमान उत्पादन कितना है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि प्रति व्यक्ति उपभोग की मात्रा, निर्धारित पौष्टिक आम भोजन की फल और सब्जियों की मात्रा से बहुत ही कम है; और

(ग) यदि हां, तो निर्धारित पौष्टिक भोजन की मात्रा को पूरा करने के लिए फलों और सब्जियों के उत्पादन को किस सीमा तक बढ़ाना होगा, तथा सरकार द्वारा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्या समयबद्ध योजना तैयार की गयी है?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव) : (क) देश में फलों और सब्जियों के उत्पादन के पक्के अनुमान उपलब्ध नहीं हैं। तथापि, तदर्थ मूल्यांकन के अनुसार देश में फलों और सब्जियों (आलू सहित) का कुल उत्पादन क्रमशः करीब 255 और 500 लाख टन था। कुल उत्पादन में हुई 25 प्रतिशत क्षति को ध्यान में रखते हुए देश में फलों और सब्जियों की प्रति दिवस प्रति व्यक्ति खपत क्रमशः 66 ग्राम और 129 ग्राम आंकी गयी है।

(ख) देश में फलों और सब्जियों की प्रति व्यक्ति खपत पोषाहार के लिए निर्धारित आवश्यक मात्रा से कुछ कम है।

(ग) 1967–68 से 1987–88 तक की अवधि के दौरान देश में फलों तथा सब्जियों को उत्पादन में प्रति वर्ष करीब, 3.80 प्रतिशत की चक्रवृद्धि विकास दर से वृद्धि हुई है। चूंकि फलों और सब्जियों की विकास दर जनसंख्या की विकास दर की तुलना में बहुत ज्यादा है, अतः इस पोषाहार संबंधी अंतराल को आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक भरे जाने की सम्भावना है।

कुप्रबंध की वजह से नष्ट होने वाली कृषि वस्तुओं की हानि

1341. **श्री राम जेठमलानी** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान नष्ट होने वाली कृषि वस्तुओं के संबंध में एक टीम द्वारा प्रस्तुत की गयी रिपोर्ट की ओर दिलाया गया जिसमें यह कहा गया है कि फलों व सब्जियों के उत्पादन के बाद देश में कुव्यवस्था के कारण करोड़ रुपये की हानि होती है ;